श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा

शान्तिनाथ महाराज का चालीसा सुखकार।
मोक्ष प्राप्ति के लिये कहूं सुनो चित्त धार।।
चालीसा चालीस दिन तक कह चालीस बार।
बढ़े जगत सम्पत्ति सुमत अनुपम शुद्ध विचार।।

चौपाई

शान्तिनाथ तुम शांतिनायक पंचम चक्री जग सुखदायक।
तुम्हीं सोलवें हो तीर्थंकर पूजे देव भूप सुर गणधर।
पंचाचार गुणों के धारी कर्म रहित आठों गुणकारी।
तुमने मोक्ष मार्ग दर्शाया, निज गुण ज्ञान भानु प्रकटाया।

स्याद्वाद विज्ञान उचारा आप तिरे औरन को तारा।
ऐसे जनको नमस्कार कर चढ़ूं सुमती शान्ति नौका पर।
सुक्ष्म सी कुछ गाथा गाता हस्तिनापुर जग विख्याता।
विश्वसेन पितु ऐरा माता सुर तिहुं काल रतन बर्षाता।

साढ़े दस करोड़ नित गिरते ऐरा मां के आंगन भरते।
पन्द्रह माह तक हुई लुटाई लेगा भर भर लोग लुगाई।
भादों बदी सप्तमी गर्भाते उत्तम सोलह सपने आते।
सुर चारों कायों के आये, नाटक गायन नृत्य दिखाये।

सेवा में जो रही देवियो रखती खुश मां को दिन रतियां।
जन्म जेठ बदी चौदस के दिन घंटे अनहद बजे गगन घन।
तीनों ज्ञान लोक सुख त्राता मंगल सकल हर्ष गुण लाता।
इन्द्र देव सुर सेवा करते विद्या कला ज्ञान गुण भरते।

अंग अंग सुन्दर मन मोहन रत्न जड़ित तन वस्त्राभूषण।
बल विक्रम यश वैभव काजा जीते छहों खण्ड के राजा।
न्यायवान दानी उपकारी परजा हर्षित निर्भय सारी।
दीन अनाथ दुखी नहीं कोई होती उत्तम वस्तु कोई।

ऊंचे आप आठ सौ गज थे बदन स्वर्ण और चिन्ह हिरण थे।
शक्ति ऐसी थी जिस्मानी बरीं हजार छानवे रानी।
लख चौरासी हाथी रथ थे घोड़ क्रोड़ अठारह शुभ थे।
सहस्त्र भूप के राजन अरबों सेवा में सेवक जन।

तीन क्रोड थी सुन्दर गइयाँ इच्छा पूर्ण करे नौ निधियाँ।
चौदह रत्न व चक्र सुदर्शन उत्तम भोग वस्तुयें अनगिन।
थी अड़तालीस क्रोड़ ध्वजायें कुण्डल चन्द्र सूर्य सम छायें।
अमृत गर्भ नाम का भोजन लाजवाब ऊंचा सिंहासन।

लाखों मन्दिर भवन सुसज्जित नारसहित तुम जिनमें शोभित।
जितना सुख था शान्तिनाथ को अनुभव होता ज्ञानवान को।
चलें जीव जो त्याग धर्म पर मिले ठाठ उनको ये सुनकर।
पच्चीस सहस्त्र वर्ष सुख पाकर उमड़ा त्याग हितकर तुम पर।

जग तुमने क्षण भंगुर जाना पाये शिवपुर भी संसारा।
वैभव सब सुपने सब जाना ज्ञानोदय जो हुआ तुम्हारा।
कामी मनुज काम को त्यागे पापी पाप कर्म से भागे।
सुत नारायण तुरन्त बिठाया तिलक चढ़ा अभिषेक कराया।

नाथ आपको बिठा पालकी देव चले ले राह गगन की।
इत उत इन्दर चंवर ढुरावें मंगल गाते वन पहुंचावे।
भेष दिगम्बर अपना कीना केश लोंच पन मुष्ठी कीना।
पूर्ण हुआ उपवास छठा, जब शुद्धाहार चले लेने तब।

कर तीनों वैराग चिंतवन् चारों ज्ञान किये सम्पादन।
चार हाथ मग लखते चलते, पट कायिका की रक्षा करते।
मनहर मीठे वचन उचरते, प्राणी मात्र का दुखड़ा हरते।
नाशवान काया यह प्यारी, इससे हो यह रिश्तेदारी।

इनसे मात पिता सुत नारी, इनके कारण फिरो दुखारी।
गर यह तन हो प्यारा लगता, तरह तरह का रहेगा मिलता।
तज नेहा काया माया का, हो भगत रे मोक्ष द्वारा का।
डवषय भोग सब दुख के कारण, त्याग धर्म ही शिव के साधन।

निधि लक्ष्मी जो कोई त्यागे, उसके पीछे पीछे भागे।
प्रेम रूप जो इसे बुलावे, उसके पास कभी नहीं आवे।
करने को जग का निस्तारा, छहो खण्ड का राज बिसारा।
देवी देव सुरासुर आये, उत्सव तप कल्याण मनावे।

पूजन नृत्य करें नत मस्तक, गाई महिमा प्रेम पूर्वक।
नहीं मिलता आहार जहां पर, देव रतन वर्षते उस पर।
जिस घर दान पात्र को मिलता, घर वह नित्य फूलता फलता।
आठों गुण सिद्धों के ध्यायकर, दशों धर्म चित काय तपाकर।

केवल ज्ञान आपने पाया, लाखों प्राणी पार लगाया।
समवशरण में ध्वनि खिराई प्राणी मात्र के समझ में आई।
समवशरण प्रभु का जहां जाता कोस चारसौ तक सुख पाता।
फूल फलादिक मेवा आती, हरी भरी खेती लहराती।

सेवा में छत्तीस ये गणधर, महिमा मुझसे क्या हो वर्णन।
नकुल, सर्प, मृग हरि से प्राणी प्रेम सहित मिल पीते पानी।
आप चतुरमुख विराजमान थे मोक्ष मार्ग को दिव्यवान थे।
करते आप बिहार गगन में, अन्तरिक्ष थे समवशरण में।

तीनों जग आनन्दित कीने, हित उपदेश हजारों दीने।
पौने लाख बरस हित कीना, उम्र रही जब एक महीना।
श्री सम्मेद शिखर पर आये अजर अमर पद तुमने पाये।
निस्पृह कर उद्धार जगत के, गये मोक्ष लाख बरस के।

आंक सकें क्या छवि ज्ञान की, जोत सूर्य सम अटल आपकी।
बहे सिन्धु सम गुण की धारा, रहे सुमत चित नाम तुम्हारा।

सोरठा

पढे चालीस ही बार, पाठ करे चालीस दिन।
खेय धूप सुसार, शान्तिनाथ के सामने।
होवे चित्त प्रसन्न, भय चिन्ता शंका मिटे।
पाप होय सब हन्न बल, विद्या वैभव बढ़े।

जाप ॐ ह्रिं सर्व शान्ति कराय श्री शान्तिनाथय नमः।।